वर्णनात्मक विधि :-

दूसरे स्थानों के प्राकृतिक दृश्य, जीवन तथा भौगोलिक विवरण, वर्णन द्वारा बालकों को बोधगम्य कराये जाने की परम्परा पहले से चली आ रही है। भौगोलिक तथ्यों तथा उनके कार्य-कारण सम्बन्धों को स्पष्ट वर्णन द्वारा बालकों के सम्मुख उपस्थित करना चाहिए। वर्णन के आधार पर बालक की कल्पना जागती है और वर्णित देशों की भूमि में मानसिक यात्राएँ कर लेता है।

वर्णन को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न अध्यापन-सामग्री का प्रयोग यथावसर एवं यथा साध्य करना चाहिए। इस प्रकार के वर्णन में बालक रुचि लेते हैं। तथा उनकी कल्पना शक्ति विकसित होती है। शिक्षक की सफलता तभी है, जब बालकों में यात्रा की तैयारी की चर्चा हो, मानचित्र द्वारा दूरियाँ नापी जायें, मार्ग के मुख्य स्थानों के नाम खोजे जायें तथा वर्णित वस्तुएं बालकों की कल्पना में साकार हो उठें।

वह वर्णन यात्रा, कहानी, वार्तालाप के रूप में भी हो सकता है। बालकों स्वयं देखी हुई भौगोलिक घटनाओं का वर्णन का अवसर देना चाहिए। वर्णन के पश्चात निष्कर्ष निकालने का कार्य बालकों से ही करवाना चाहिए। भौगोलिक वर्णनों में एक घनिष्ठ क्रम होना चाहिए और उन्हें स्वतः पूर्ण बनाना चाहिए। शिक्षक को पूर्ण सावधानी और तैयारी के साथ पढ़ने से पूर्व वर्णन के सभी अंगों पर विचार कर लेना चाहिए।

वर्णनात्मक विधि द्वारा पढ़ाते समय देश-विदेश के भूगोल का साधारण ज्ञान रखना वांछनीय है। बालकों को भी वर्णन करने का अवसर देना चाहिए। यदि किसी बालक ने कोई स्थान या वस्तु देखी है तो उसे उसका वर्णन कक्षा में सुनाने देना चाहिए।

शिक्षक द्वारा वर्णन सरल और सुबोध भाषा में हो, जिसको कक्षा के सभी बालक सुगमतापूर्वक समझ सकें और अपनी कल्पना द्वारा उसका मानसिक चित्र खड़ा कर सकें।

वर्णन में आने वाले भौगोलिक पारिभाषिक शब्दों को भली-भाँति स्पष्ट कर देना चाहिए। वर्णन के आधार पर कुछ भौगोलिक निष्कर्ष भी निकाले जाने चाहिए। वर्णन पूर्ण होना चाहिए, ताकी बालकों की कल्पना अधूरी या त्रुटिपूर्ण न रह सके। अध्यापक को कक्षा में पढ़ाने के पूर्व पाठ का ढाँचा अपने मस्तिष्क में तैयार कर लेना चाहिए, अध्यापक को यह भी ~~समझने में कठिनाई न हो।~~ चित्र ध्यान रखना चाहिए कि प्रारम्भ के वर्णन को बालक ध्यानपूर्वक सुनें जिससे शेष वर्णन समझने में कठिनाई न हो। चित्र, मानचित्र, और माडल बड़े आकार के हों, ताकि एक स्थान पर खड़े होकर सम्पूर्ण कक्षा देख सके। अध्यापक के छोटे चित्र या नमूने कक्षा के विद्यार्थियों को दिखाते समय अनुशासन सम्बधी समस्याओं का ध्यान रखना चाहिए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

21.09.2020